IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में गांधीजी के विकेंद्रित अर्थव्यवस्था आधारित विचारों का भौगोलिक विश्लेषण

श्रीमती संगीता पांचाल

सहायक आचार्य

भूगोल विभाग

सनातन धर्म राजकीय महाविद्यालय ब्यावर

सारांश: पर्यावरण आधुनिकीकरण तथा मशीनी क्रय अर्थव्यवस्था के बारे में दृष्टि और व्यवहार में महात्मा गाँधी शुरुआती पर्यावरण विद् के रूप में वर्तमान दौर में उनकी प्रासंगिकता निम्न कथन से परिलक्षित होता है "पृथ्वी पर हमारी ज़रूरतों के लिए पर्याप्त संसाधन हैं, लेकिन हमारे लालच के लिए नहीं"। यह कथन वर्तमान दौर में अधिक प्रासंगिक हो जाता है जब वैश्वीकरण के दौर में सतत वृद्धि व विकास को प्राप्त करना हो क्योंकि मशीनीकृत अर्थव्यवस्था पर अधिक निर्भर होने के बजाय मानवीकृत या जनता द्वारा उत्पादन पर गाँधी जी ने अधिक बल दिया जिसके परिणामस्वरूप ऐसी आर्थिक व्यवस्था को विकसित होंगी जो पर्यावरण हितैषी हो सतत विकास वह समावेशी विकास की प्राप्ति हो तथा पृथ्वी पर जीवन की गुणवत्ता बनी रहे। भारतीय संस्कृति के अनुरूप वासुदेव कुटुम्बकम की भावना से ओतप्रोत हों इस इस। स्टीव इस तरह प्रस्तुत शोध पत्र पर्यावरण हितैषी वे केंद्रित अर्थव्यवस्था पर गांधीजी के विचारों की भौगोलिक व्याख्या करने पर बल देता है।

शब्द कुंजी: विकेंद्रीकरण, प्रासंगिकता, वैश्वीकरण, समावेशी विकास, अर्थव्यवस्था, सर्वोदय

उद्देश्य : आधुनिक वैश्वीकरण के दौर में औद्योगिक अर्थव्यवस्था को समावेशी बनाने में गांधीजी के विचारों की प्रासंगिकता की भौगोलिक व्याख्या करना।

गाँधीजी ने न्यास आधारित सिद्धांत तथा रस्किन बॉन्ड द्वारा लिखित पुस्तक 'ऑन टू द लास्ट' इससे प्रेरित होकर सर्वोदय नामक पुस्तक का प्रकाशन करवाया। इस पुस्तक में व्यक्त विचार धारा द्वारा गाँधी जी ने औद्योगिक विकेंद्रीकरण को प्रोत्साहित किया। केंद्रीकृत औद्योगिक अर्थव्यवस्था में किसी क्षेत्र विशेष के संसाधनों, औद्योगिक केंद्र तक स्थानांतरण, संयंत्रों से कच्चे माल के उपयोग से वस्तु विशेष का उत्पादन एवं अंतत: विभिन्न क्षेत्रों में उत्पादित वस्तुओ के वितरण आदि प्रत्येक चरण में पग पग पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पर्यावरण को दूषित करने में अहम भूमिका निभाता है।इससे प्रदूषण बढ़ता है व ऊर्जा का अभ् होता। । इसके विपरीत वी केंद्रित औद्योगिकीकरण इन समस्याओं पर नियंत्रण प्राप्त करने में सहायक है इस दिशा में गाँधी जी ने कुटीर उद्योगों पर अधिक बल देते हुए कहा कि हमें छोटे छोटे यंत्र उपकरण उपस्कर ओजार एवं हथियार बनाने चाहिए जो मनुष्य के साथी हो और उसके व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास हेतु उत्प्रेरक

का कार्य करें। । छोटी छोटी कार्यशालाओं में मनुष्य श्रम प्रधान तकनीक के जरिए उत्पादन करें एवं बेकार ना रहे।

अनियंत्रित औद्योगिकीकरण के प्रत्येक गांधीजी का विरोध सर्वविदित है मशीनीकरण के अतिवादी समर्थक तो उनके औद्योगीकरण का शत्रु ही समझते हैं। लेकिन उन्होंने यह भी नहीं कहा कि औद्योगिकीकरण निरर्थक है। उनका आग्रह केवल इतना था कि यंत्रीकरण की सारी योजनाओं में मनुष्य का स्थान सर्वोपरि होना चाहिए। केंद्रीयकृत अर्थव्यवस्था दूषित अर्थव्यवस्था है क्योंकि मशीन के प्रयोग से व्यक्ति किसी वस्तु के छोटे से भाग का ही निर्माण करता है, पूर्ण वस्तु का नहीं। इससे व्यक्ति स्वावलंबी नहीं बनता। फिर वस्तु का निर्माण कही और तथा उपयोग कहीं ओर होने के कारण उत्पादक व उपभोक्ता में मानवीय संबंध, सहानुभूति की भावना उत्पन्न नहीं होती। इस व्यवस्था में मालिक व मजदूर में छोटे बड़े का भाव रहता है। । बेरोजगारी भी इसी व्यवस्था की देन हैं। किंतु केंद्रीकरण में सहकारिता, समानता, आत्मीयता व स्वावलंबन की प्राप्ति होती है। महात्मा गाँधी चाहते थे कि प्रत्येक गांव स्वावलंबी हो। अर्थात ग्रामवासी स्वयं अपने जरूरत की वस्तुओं का उत्पादन करें। इससे ग्रामवासियों में सहयोग, सहानुभूति व प्रेम की भावना उत्पन्न होगी तथा वे व्यापारी की लूट से बच सकेंगे। महात्मा गाँधी कहते थे कि यंत्र भले ही रहे किंतु मानव हित के लिए, मनुष्य की थकान कम करने के लिए ना की बेरोजगारी उत्पन्न करने के लिए तथा एक वर्ग का दूसरे वर्ग के शोषण के लिए। ऐसा नहीं होना चाहिए कि मनुष्य यंत्रों का दास बन जाए। गाँधी जी के इस तर्क का स्पष्ट कारण अर्थशास्त्रीय था। इसका प्रधान उद्देश्य था कि श्रम शक्ति की महत्ता को बनाए रखना और आर्थिक शोषण का विरोध करना। विदित हो कि उनके इस चिंतन में एक महत्वपूर्ण परिस्थितिकीय सिद्धांत का बीज निहित है। पर्यावरण प्रदुषित न हो, इसके लिए गाँधी जी ने 'ग्राम सुराज' की कल्पना की थी।

अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में गाँधी जी की रस्किन से प्रभावित विचार धारा सर्वोदय एक प्रमुख विचारधारा है। रस्किन की पुस्तक ऑन टू द लास्ट में व्यक्त विचारधारा से प्रभावित होकर महात्मा गाँधी ने इस पुस्तक के सारांश को सर्वोदय नामक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया व इस विचारधारा का प्रसार किया। विनोबा भावे ने भूदान, श्रमदान व संपत्ति दान विशेषकर भूदान के आयोजनों से इस विचारधारा को मूर्त रूप दिया किंतु अब यह विचारधारा मृतप्राय है।

प्राचीन काल से हमारे देश के साहित्य में विशेषकर धार्मिक साहित्य में इसका उल्लेख है। हजारों वर्षों पहले ऋषियों ने कहा था 'सर्वे भवंतु सुखिनः' सभी सुखी हों।

सर्वोदय विचारधारा का लक्ष्य है सबका भला हो। अतः सर्वोदय यह स्वीकार नहीं करता है कि सबके हित में परस्पर विरोध है। वस्तुतः एक के हित में सबका हित है। एक के सवस्थ बुद्धिमान या धनवान होने में सभी का भला है। अतः सर्वोदय के अनुसार कोर वर्ग समाज में दूसरे वर्ग का शोषण न करे लोग आपस में ईर्ष्या, द्वेष ना रखें व सभी का लक्ष्य एक दूसरे की भलाई व उन्नति हो।

महात्मा गाँधी कहते हैं कि सर्वोदय की विचारधारा अपनाने हेतु आवश्यक है कि हम सभी प्रकार के संकुचित भावों का परित्याग करें, , चाहे वह व्यक्तिगत, पारिवारिक, सांप्रदायिक, प्रादेशिक या राष्ट्रीय हो।

वस्तुतः सर्वोदय की भावना विश्व बंधुत्व की भावना है। मानव संस्कृति का इतिहास यह बताता है कि मनुष्य में स्वार्थ की जगह सहयोग व प्रेम की भावना अधिक है। यदि ऐसा नहीं होता है तो पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय संगठन व्यावहारिक नहीं रहते। महात्मा गाँधी के अनुसार हिंसा व संघर्ष तो प्रेम व सहयोग के व्यापक नियम के अपवाद हैं।

स्कूल सर्वोदय का समानार्थी तो नहीं किंतु इससे संबंधित ही वर्तमान की एक प्रमुख संकल्पना समावेशी विकास की अवधारणा है। समावेशी विकास का तात्पर्य है "समाज के सब सभी वर्गों तथा लोगों का समग्र व सर्वांगीण सामाजिक आर्थिक विकास"। यह एक ऐसी संकल्पना है जिनके द्वारा मुख्यतः सामाजिक आर्थिक

रूप से पिछड़े वर्गों के लोगों को विकास की मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया जाता है। समावेशी विकास अर्थव्यवस्था, पूंजी, रोजगार एवं संसाधनों के विकेन्द्रीकरण तथा विकास के विवरणात्मक पहलू से संबंधित है , दरअसल समावेशी विकास के दार्शनिक सिद्धान्त तथा व्यावहारिक पहलू का यही सार रूप है कि अर्थव्यवस्था से जुड़ें तकरीबन सभी क्षेत्र अपेक्षित व संतुलित गति से विकास करें तथा इनका लाभ देश के प्रत्येक नागरिक को मिले।

वर्तमान परिपेक्ष्य में देखा जाए तो भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की छठी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की सर्वाधिक तेजी से विकसित हो रही अर्थव्यवस्था जैसे आकर्षण और चमकते दमकते टैंगो के बावजूद भारत में अधिसंख्यह जनसंख्या के लिए बुनियादी समस्याए जस की तस बनी हुई है। एक मोटे अनुमान के अनुसार विश्व में सर्वाधिक निर्धन भारत में ही रहते है। भारत में आए एवं धन के वितरण में असमानताओं में 80 के दशक के बाद से असाधारण रूप से वृद्धि हुई है। विश्व असमानता रिपोर्ट 2018 के अनुसार 2014 मैं देश की 22% राष्ट्रीय आय पर मात्र 1% लोगों का कब्जा था। शीर्ष 10 प्रतिशत जनसंख्या का राष्ट्रीय आय में हिस्सा लगभग 56% था। 1980 के बाद से शीर्ष 1% जनसंख्या का राष्ट्रीय आय में हिस्सा जहाँ कई गुना बढ़ा है वहीं नीचे की 50% जनसंख्या का राष्ट्रीय आय में हिस्सा 2014 में घटकर 15 प्रतिशत के स्तर पर आ गया है।

अर्थव्यवस्था में व्याप्त उपर्युक्त असमानता की खाई को पाटने का सर्वोपरि उपाय गाँधी जी के सर्वोदय न्यास धारिता समावेशी विकास में ही छुपा हुआ है। अहिंसा, सादगी, विकेंद्रीकरण, स्वावलंबन व आर्थिक समानता सर्वोदय के मूल आधार है। दूसरों के हित की भावना अहिंसा है तथा दूसरों के अहित की भावना हिंसा है। वस्तुतः दूसरों के अहित से व्यक्ति स्वयं का ही अहित करता है। मजदूर को कम वेतन देकर मालिक स्वयं का नैतिक व आध्यात्मिक पतन करता है जिसकी तुलना में कम वेतन देने से प्राप्त आर्थिक लाभ का कोई महत्त्व नहीं है।

विलासिता के सेवन पर नियंत्रण रखने से जीवन में सादगी व शांति प्राप्त होती है तथा नियंत्रण के फलस्वरूप जो आर्थिक व सामयिक बचत होती है उससे मनुष्य दूसरों की सेवा व स्वयं का सांस्कृतिक विकास कर सकता है।

आर्थिक समानता का अर्थ यह नहीं है कि सभी को एक निर्धारित रकम मिला करें। इसका अर्थ यह है कि प्रत्येक को ऐसी रकम मिलनी चाहिए जिससे आवश्यकता की पूर्ति हो सके। । आवश्यकता निर्धारण में भी कोई विवाद नहीं रहेगा यदि हमारा लक्ष्य परिग्रहण न होकर अपरिग्रह हो क्योंकि तब किसी भी कम व किसी भी अधिक आवश्यकता होने पर भी संघर्ष नहीं होगा, जैसा कि परिवार में नहीं होता। अपरिग्रह के साथ साथ आर्थिक समानता के लिए ट्रस्टी होगा, और संपत्ति का उपभोग सार्वजनिक हित के लिए करेगा। इससे पूँजीवादी व्यवस्था को वर्ग संघर्ष व साम्यवादी हिंसक तरीकों से बचाव होगा। सभी के प्रति प्रेम, दया व समानता की भावना से ही ट्रस्टीशिप की भावना व्यावहारिक होगी।

वैश्वीकरण के बाद उदारीकरण और निजीकरण के नाम पर केंद्र व राज्य सरकारों ने बहुराष्ट्रीय कंपनियों को प्राकृतिक संसाधनों के दोहन को खुली छूट दी। उसका नतीजा यह है कि देश का बहुत सारा प्राकृतिक संसाधन खत्म होने की कगार पर है। इसके अलावा राजनेताओं और भू माफियाओं के जरिए संसाधनों पर जो डाका डाला जा रहा है वह तो अत्यंत ही भयावह है। भारतीय अपरिग्रह वाली संस्कृति से प्रेरित गांधीजी के अनुसार प्राकृतिक संसाधनों के उचित उपयोग व प्रकृति हमारी माँ है की विचारधारा को प्रत्येक परिवार में पहुंचाने की आवश्यकता है। आने वाली पीढ़ी के लिए हमारा दायित्व क्या है ? हमें उसी तरह समझना होगा जीस तरह से हमारे पूर्वज अपरिग्रह के सिद्धांत का पालन करते हुए हमें प्रकृति का अकूत भंडार हमारे लिए सुरक्षित छोड़ गए थे। पश्चिम की संस्कृति हमारे लिए किसी भी तरह उपयोगी नहीं है। इस सच्चाई को हमें समझने की जरूरत है, हमारे लिए जिंस चीज़ की जितनी जरूरत है उससे अधिक इकट्ठा करना किसी भी तरह उचित नहीं है। गांधीजी के शब्दों में यह हिंसा और पाप है, प्राकृतिक दोहन की आज

जो प्रतियोगिता सभी देशों से छिड़ी दिखाई पड़ रही है, उसके दुष्प्रभाव को हमें समझने की तत्काल आवश्यकता है। स्टे दरअसल सारी समस्या प्रबंधन की जानकारी न होने के कारण है। एक बेहतर जिंदगी में किस चीज़ की जरूरत कितनी, किस प्रकार और कब होती है, इसका इस्तेमाल किस तरह से करना चाहिए और दूसरों को हम इससे कितना फायदा पहुंचा सकते हैं इस पर गौर करने की जरूरत है।

महात्मा गाँधी भारतीय स्वतंत्रता के सबसे बड़े नायक तो थे ही किन्तु उनका संघर्ष केवल राजनीतिक संघर्ष नहीं था। उनका संघर्ष एक सर्वांगीण क्रांति का प्रयास था जिसके अंतर्गत मानवीय सभ्यता के संभवत किसी भी प्रश्न को छोड़ा नहीं गया था, , वे सामाजिक स्तर पर जातिवाद, रंगभेद, नस्लवाद जैसे विभेदकारी सिद्धांतों के कट्टर विरोधी थे वहीं दूसरी ओर आर्थिक दृष्टि से आत्म निर्भरता उनके विचार के केंद्र में रहती थी। राजनीतिक एवं सामाजिक दृष्टि से प्रत्येक व्यक्ति को समान अधिकार तथा आर्थिक न्याय प्रदान करने वाला समाज उनके सपनों के भारत का प्रतिरूप था।

, महात्मा गाँधी ने चरखे को सबसे बड़ा हथियार बनाया, चरखा न केवल एक उपकरण था बल्कि यह भारतीय अर्थव्यवस्था की आत्मनिर्भरता का प्रतीक भी था। गाँधी जी ने समझ लिया था कि जब तक प्रत्येक व्यक्ति आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नहीं होगा तब तक समाज की इकाई या आत्मनिर्भर नहीं होंगी और उनके अंदर आत्मनिर्भर एवं स्वावलंबन की भावना पैदा नहीं होगी। यह न केवल आर्थिक प्रश्न था बल्कि आत्म सम्मान के साथ जीवनयापन करने का अधिकार भी था। महात्मा गाँधी ने ओपने वैश्विक ब्रिटिश भारत के चरित्र को समझ लिया था कि उक्त शासन का मूल उद्देश्य भारत का आर्थिक शोषण करना है। क्रम में ब्रिटिश अधिकारी भारत से कच्चा माल ले जाकर सस्ता तैयार माल भारतीयों पर अधिरोपित करते थे। इस प्रणाली की एक मुख्य वस्तु सूती वस्त्र थी। महात्मा गाँधी का चरखा ब्रिटिश साम्राज्य के सभी शोषणकारी उद्देश्य से संघर्ष करने का हथियार था। उनके अनुसार यदि हम आर्थिक उत्पादन में आत्मनिर्भर हो जाएंगे जिससे कि ब्रिटिश कंपनियों के लिए भारत में बाजार उपलब्ध नहीं होगा तब ब्रिटिश को भारत से बाहर निकालने में अधिक समय नहीं लगेगा।

गाँधीजी आमजन द्वारा उत्पादन को विकास, समानता और शांति के लिए जरूरी शर्त मानते थे। वह हर गांव को एक स्वतंत्र और आत्मनिर्भर इकाई मानने की हिमायती थे जिससे दस्तकारों, शिल्पकारों और श्रमिकों को आजीविका की पुश्तैनी और अर्जित गतिविधियों को जारी रखने के पर्याप्त अवसर हासिल हो सके। गांव में बुनाई, तेल पिसाई, शहद, पापड़ कागज और साबुन उत्पादन तथा धान की हाथ से कुटाई जैसे असंख्य ग्रामोद्योग शुरू किये जा सकते हैं।

वर्तमान समय में भारत सरकार की महत्वपूर्ण योजना मेक इन इंडिया को महात्मा गाँधी की आत्मनिर्भर आर्थिक व्यवस्था के साथ स्वतः रूप से जोड़ा जा सकता है। मेक इन इंडिया का भी यही उद्देश्य है कि अधिकतम रूप से भारतीय अर्थव्यवस्था उत्पादन करने ताकि अपनी आवश्यकताओं के साथ साथ निर्यात के लिये भी बड़ी मात्रा में वस्तुओं एवं सेवाओं का निर्माण कर सकें। सामाजिक दृष्टि से महात्मा गाँधी प्रत्येक व्यक्ति की प्रतिष्ठा की समानता में विश्वास करते थे। उनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं का विकास करने के लिए समान अवसर उपलब्ध होने चाहिए। यह उल्लेखनीय है कि इस क्रम में महात्मा गाँधी भारतीय संस्कृति से पूर्ण तालमेल की बात करते हैं। उनके अनुसार प्रत्येक चाहे वो स्त्री हो या पुरुष या निम्न जाति से संबंधित हों उसे रोजगार चुनने की पूरी स्वतंत्रता होनी चाहिए। हालांकि उन्होंने महिलाओं को घरेलू भूमिका को पूर्णतः नहीं नकारा फिर भी वे महिलाओं के साथ समान प्रतिष्ठापूर्ण व्यवहार करने की वकालत करते थे। उन्होंने जाति व्यवस्था के अंतर्गत तथाकथित निम्न जातियों को समान अधिकार उपलब्ध कराने की बात की, किन्तु उनका आग्रह हिंदू धर्म के अंदर ही इन्हें सम्मानपूर्ण एवं समान स्थान प्राप्त कराने का होता था।

महात्मा गाँधी के विचार काल एवं स्थान के बंधनों से परे है। यदि कोई व्यक्ति या समाज इनके विचार को प्रासंगिक नहीं मानता है तो इसका अर्थ केवल इतना हो सकता है कि वह व्यक्ति या समाज स्वार्थ सिद्धि को ही प्राथमिकता देते हैं तथा उसके विचार में सार्वभौमिक, सामाजिक तथा वैश्विक हित मायने नहीं रखते। महात्मा गाँधी के विचारों की प्रासंगिकता के कई प्रमाण हो सकते हैं किंतु उनकी प्रासंगिकता का सबसे बड़ा प्रमाण संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा महात्मा गाँधी की जयंती को 'विश्व अहिंसा दिवस' के रूप में मनाया जाना है। महात्मा गाँधी के श्रम को गरिमा प्रदान करने और एक ऐसे ग्रामीण शहरी या ग्रामीण उन्मुख शहरी समाज के निर्माण में योगदान देकर आज का भारतीय युवा उनकी 150 वीं जयंती के अवसर पर गाँधी जी को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर सकता है जो समस्त विज्ञान और प्रौद्योगिकी जीवन की नीरसता को कम करने में मददगार हों। वह भौतिक, सामाजिक और संचार साधन उपलब्ध कराने और बुनियादी न्यूनतम जरूरतें पूरा करने में हाथ के इस्तेमाल को सहायता करें यही गाँधी जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. यंग इंडिया
2. गाँधी विचार दर्शन: सह दयाल सिंह राठौड़, पुरोहित प्रकाशन, जोधपुर।
3. हरिजन
4. महात्मा गाँधी का दर्शन, डॉ. वीरेंद्र मोहन दत्त, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना।
5. सिविल सर्विसेज क्रॉनिकल (नवंबर 2018)
6. प्रतियोगिता दर्पण लेख (अगस्त 2018)
7. गाँधीजी ऑटोबायोग्राफी "द स्टोरी ऑफ एक्सपेरीमेंट्स विद ट्रुथ" (सत्य के साथ मेरे अनुप्रयोग), महादेव देसाई द्वारा अनुवादित, वाशिंगटन डीसी पब्लिक अफेयर्स प्रेस 1948।
8. बसंत कुमार लाल, समकालीन भारतीय दर्शन, श्री जितेंद्र प्रेस, 1973।
9. राय, बी.एन. गांधीगिरी सत्याग्रह आफ्टर 100 ईयर्स, कावेरी बुक्स, नई दिल्ली, 2008, पेज नं. 6
10. घोष, एस. मॉडर्न इंडियन थॉट अलाइड पब्लिश, प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली पेज 172।
11. गाँधी एम के यंग इंडिया, 11 अगस्त 1920,पेज नं. 3
12. जॉली सुरजीत कुमार, रीडिंग गाँधी कॉन्सेप्ट पब्लिकेशन, नई दिल्ली 2008 पेज 306 एवं 278
13. अय्यर राघवन, एन. "द मॉडल एंड पॉलिटिकल थॉट ऑफ महात्मा गाँधी", ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस 2000.